SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-03| March- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.03

विकसित भारत की संकल्पना और लघु उद्योगों की भूमिका: एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ.रमन प्रकाश

एसोसिएट प्रोफेसर-भूगोल विभाग , भारतीय महाविद्यालय,फर्रुखाबाद

सारांश

भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित विकसित भारत @2047 का लक्ष्य वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए औद्योगिक विकास, विशेष रूप से लघु उद्योगों (Small Scale Industries) का सुदृढ़ीकरण अत्यंत आवश्यक है। लघु उद्योग कम पूंजी निवेश में अधिक रोजगार सृजन करते हैं तथा ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं। यह शोध पत्र विकसित भारत की संकल्पना के संदर्भ में लघु उद्योगों की भूमिका का भौगोलिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करता है। अध्ययन में लघु उद्योगों के क्षेत्रीय वितरण, आर्थिक योगदान, रोजगार सृजन तथा ग्रामीण विकास में उनकी भूमिका का अध्ययन किया गया है। द्वितीयक स्रोतों पर आधारित इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि लघु उद्योग क्षेत्र भारत की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है तथा संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देता है। यदि आधुनिक तकनीक, वित्तीय सहायता और बाजार सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ तो लघु उद्योग विकसित भारत के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं।

बीज शब्द : विकसित भारत, लघु उद्योग, क्षेत्रीय विकास, आर्थिक भूगोल, ग्रामीण अर्थव्यवस्था |

प्रस्तावना

वर्तमान समय में प्रत्येक राष्ट्र का प्रमुख लक्ष्य आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी दृष्टि से समृद्ध और विकसित बनना है। भारत भी इसी दिशा में निरंतर प्रयासरत है। भारत सरकार ने वर्ष 2047 तक देश को एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसे विकसित भारत @2047 की संकल्पना के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह लक्ष्य भारत की स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर एक सशक्त, आत्मनिर्भर और समृद्ध राष्ट्र के निर्माण की परिकल्पना को दर्शाता है। विकसित भारत की इस अवधारणा में आर्थिक प्रगति, औद्योगिक विकास, सामाजिक समानता, तकनीकी उन्नति तथा क्षेत्रीय संतुलन जैसे अनेक आयाम शामिल हैं। किसी भी देश के आर्थिक विकास में औद्योगिक क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत में औद्योगिक विकास के विभिन्न स्तर हैं, जिनमें बड़े उद्योग, मध्यम उद्योग तथा लघु उद्योग शामिल हैं। इनमें लघु उद्योगों का विशेष महत्व है, क्योंकि ये कम पूंजी निवेश में अधिक रोजगार सृजन करने की क्षमता रखते हैं और स्थानीय संसाधनों के उपयोग को बढ़ावा देते हैं। भारत में लघु उद्योगों को सामान्यतः Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises (MSME) के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। यह क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देने के साथ-साथ उद्यमिता और नवाचार को भी प्रोत्साहित करता है।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने के लिए लघु उद्योगों का विकास अत्यंत आवश्यक है। बड़े उद्योग प्रायः महानगरों और विकसित क्षेत्रों में स्थापित होते हैं, जबकि लघु उद्योग ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में भी स्थापित किए जा

सकते हैं। इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं और आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि होती है। भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो लघु उद्योग स्थानीय कच्चे माल, श्रमशक्ति और बाजार की उपलब्धता के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में विकसित होते हैं। इस प्रकार लघु उद्योग न केवल आर्थिक विकास को गति देते हैं बल्कि संतुलित क्षेत्रीय विकास को भी प्रोत्साहित करते हैं। भारत सरकार द्वारा औद्योगिक विकास और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएँ और कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इनमें मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया तथा आत्मनिर्भर भारत अभियान जैसी पहलें विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य देश में उत्पादन क्षमता को बढ़ाना, रोजगार के अवसरों का विस्तार करना तथा लघु और मध्यम उद्योगों को प्रोत्साहित करना है। हालाँकि लघु उद्योगों के समक्ष वित्तीय संसाधनों की कमी, आधुनिक तकनीक का अभाव, विपणन संबंधी समस्याएँ तथा आधारभूत संरचना की कमी जैसी अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। इसके बावजूद यह क्षेत्र भारत की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है और रोजगार सृजन का एक प्रमुख स्रोत बना हुआ है।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में लघु उद्योग ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं। इसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय असमानताओं में कमी आती है और संतुलित विकास संभव हो पाता है। इसलिए विकसित भारत की संकल्पना में लघु उद्योगों की भूमिका को विशेष महत्व दिया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- विकसित भारत की संकल्पना का विश्लेषण करना।
- लघु उद्योगों की प्रकृति एवं विशेषताओं का अध्ययन करना।
- भौगोलिक दृष्टिकोण से भारत में लघु उद्योगों के क्षेत्रीय वितरण का अध्ययन करना।
- विकसित भारत के निर्माण में लघु उद्योगों की भूमिका का मूल्यांकन करना।

शोध प्रविधि :

यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources) पर आधारित है। अध्ययन के लिए विभिन्न सरकारी रिपोर्टों, शोध पत्रों, पुस्तकों तथा आधिकारिक वेबसाइटों से जानकारी प्राप्त की गई है।

अध्ययन में वर्णनात्मक (Descriptive) और विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धति का उपयोग किया गया है।

डेटा स्रोतों में प्रमुख रूप से निम्नलिखित शामिल हैं—

- नीति आयोग की रिपोर्ट
- Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises की वार्षिक रिपोर्ट
- आर्थिक भूगोल से संबंधित पुस्तकें और शोध पत्र

साहित्य समीक्षा :

आर्थिक भूगोल और भारतीय अर्थव्यवस्था से संबंधित अनेक विद्वानों ने लघु उद्योगों की भूमिका पर अध्ययन किया है। **Majid Husain (2017)** ने अपनी पुस्तक Economic Geography में औद्योगिक विकास के स्थानिक वितरण और संसाधनों के महत्व का विस्तृत वर्णन किया है। उनके अनुसार औद्योगिक विकास क्षेत्रीय आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण आधार है। **V. K. Puri और S. K. Misra (2018)** ने भारतीय अर्थव्यवस्था में लघु उद्योगों के योगदान को स्पष्ट करते हुए बताया कि ये उद्योग रोजगार सृजन और निर्यात वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी प्रकार **नीति आयोग की रिपोर्टों** में भी यह उल्लेख किया गया है कि लघु उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था में लगभग 30 प्रतिशत GDP और बड़े पैमाने पर रोजगार प्रदान करते हैं।

विकसित भारत की संकल्पना

विकसित भारत की संकल्पना का अर्थ ऐसा राष्ट्र है जहाँ आर्थिक विकास, सामाजिक समानता और पर्यावरणीय संतुलन का समन्वित विकास हो। भारत सरकार ने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं, जैसे—

- **मेक इन इंडिया** : मेक इन इंडिया भारत सरकार द्वारा 25 सितंबर 2014 को शुरू की गई एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य भारत को एक वैश्विक विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) केंद्र के रूप में विकसित करना है। इसका मुख्य लक्ष्य देश में उद्योगों को बढ़ावा

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

देना, विदेशी निवेश आकर्षित करना, रोजगार के अवसर बढ़ाना और घरेलू उत्पादन को मजबूत बनाना है। इस योजना के अंतर्गत ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, रक्षा उत्पादन, वस्त्र और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे अनेक क्षेत्रों में निवेश को प्रोत्साहित किया गया है। मेक इन इंडिया भारत की आर्थिक वृद्धि और आत्मनिर्भरता को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है

- **स्टार्टअप इंडिया** : स्टार्टअप इंडिया भारत सरकार द्वारा 16 जनवरी 2016 को शुरू की गई एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य देश में नवाचार (Innovation) और उद्यमिता को बढ़ावा देना है। इसका मुख्य लक्ष्य युवाओं को नए व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करना, रोजगार के अवसर बढ़ाना और देश की आर्थिक प्रगति को गति देना है। इस योजना के अंतर्गत स्टार्टअप कंपनियों को कर में छूट, आसान पंजीकरण प्रक्रिया, वित्तीय सहायता तथा तकनीकी सहयोग जैसी सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। इससे भारत में उद्यमिता और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा मिल रहा है।
- **आत्मनिर्भर भारत अभियान** : आत्मनिर्भर भारत अभियान भारत सरकार द्वारा मई 2020 में शुरू की गई एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य भारत को आर्थिक रूप से मजबूत और आत्मनिर्भर बनाना है। इसका मुख्य लक्ष्य देश में घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना, स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहित करना और आयात पर निर्भरता को कम करना है। इस अभियान के अंतर्गत लघु, कुटीर और मध्यम उद्योगों को वित्तीय सहायता, सुधारात्मक नीतियाँ और विभिन्न प्रोत्साहन प्रदान किए गए हैं। यह पहल रोजगार सृजन और देश की आर्थिक प्रगति को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाना, रोजगार सृजन करना और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत को सशक्त बनाना है।

भारत में लघु उद्योगों की संकल्पना :

भारत में लघु उद्योगों को Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises (MSME) के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। भारत में लघु उद्योगों की अवधारणा का विकास विशेष रूप से स्वतंत्रता के बाद हुआ, जब देश के आर्थिक विकास और रोजगार सृजन के लिए छोटे उद्योगों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता महसूस की गई। लघु उद्योग कम पूंजी में अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं, इसलिए इन्हें श्रमप्रधान उद्योग भी कहा जाता है। यह उद्योग ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लघु उद्योगों के प्रमुख उदाहरणों में खादी और ग्रामोद्योग, हस्तशिल्प उद्योग, हथकरघा उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग तथा छोटे विनिर्माण उद्योग शामिल हैं। ये उद्योग स्थानीय कच्चे माल का उपयोग करते हैं और स्थानीय बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इसके अतिरिक्त कई लघु उद्योगों के उत्पाद अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी निर्यात किए जाते हैं।

लघु उद्योगों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि ये क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देते हैं। बड़े उद्योग प्रायः महानगरों और औद्योगिक क्षेत्रों में स्थापित होते हैं, जबकि लघु उद्योग ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में भी स्थापित किए जा सकते हैं। इससे क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने में सहायता मिलती है। अंततः कहा जा सकता है कि भारत में लघु उद्योग आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और ग्रामीण विकास के महत्वपूर्ण साधन हैं। इसलिए देश की संतुलित और समावेशी आर्थिक प्रगति के लिए लघु उद्योगों का विकास अत्यंत आवश्यक है।

भारत में लघु उद्योगों का भौगोलिक वितरण :

भारत में लघु उद्योगों का वितरण असमान है और यह मुख्यतः संसाधनों, श्रम, परिवहन और बाजार पर निर्भर करता है।

क्रम सं.	राज्य	प्रमुख उद्योग
1	उत्तर प्रदेश	चमड़ा, पीतल उद्योग
2	गुजरात	वस्त्र उद्योग
3	तमिलनाडु	इंजीनियरिंग एवं वस्त्र उद्योग
4	राजस्थान	हस्तशिल्प उद्योग
5	महाराष्ट्र	खाद्य प्रसंस्करण उद्योग

यह वितरण दर्शाता है कि लघु उद्योग स्थानीय संसाधनों और भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार विकसित होते हैं।

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

भारत में MSME का सेक्टरवार वितरण : भारत में MSME इकाइयों का सबसे बड़ा हिस्सा व्यापार (Trade) क्षेत्र में लगभग 36% है, जबकि विनिर्माण (Manufacturing) क्षेत्र लगभग 31% और अन्य सेवा क्षेत्र लगभग 33% योगदान देता है। यह वितरण दर्शाता है कि भारत की लघु उद्योग संरचना मुख्य रूप से व्यापार और सेवा गतिविधियों पर आधारित है, जबकि विनिर्माण क्षेत्र भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

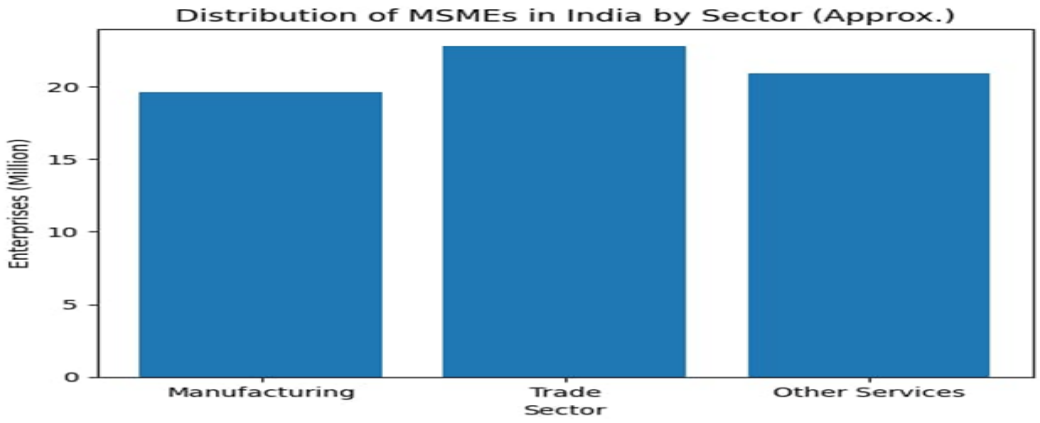

स्रोत : Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises (2023)

भारत के राज्यों में MSME वितरण (उद्यम पंजीकरण के तहत पंजीकृत MSME उद्यमों की कुल संख्या-2021)

क्रम	राज्य	MSME इकाइयाँ (लगभग)	राष्ट्रीय प्रतिशत (%)
1	महाराष्ट्र	2363739	17%
2	तमिलनाडु	792687	10%
3	उत्तर प्रदेश	533880	9–10%
4	पश्चिम बंगाल	247931	8–9%
5	राजस्थान	806504	7%
6	गुजरात	743866	7%
7	आंध्र प्रदेश	228299	6%
8	कर्नाटक	372826	5–6%
9	बिहार	246819	4–5%
10	मध्य प्रदेश	614241	4–5%
11	केरल	62972	4%
12	हरियाणा	319725	3–4%
13	तेलंगाना	720770	3–4%
14	असम	302966	3%
15	पंजाब	209101	3%

भारत में MSME इकाइयों का वितरण क्षेत्रीय रूप से असमान है। महाराष्ट्र, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश MSME क्षेत्र के प्रमुख केंद्र हैं और ये तीनों राज्य मिलकर लगभग 35–40% MSME गतिविधियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। पश्चिम बंगाल, राजस्थान और गुजरात भी महत्वपूर्ण औद्योगिक राज्य हैं जहाँ बड़ी संख्या में लघु उद्योग स्थापित हैं। यह वितरण दर्शाता है कि औद्योगिक आधार, बाजार की उपलब्धता, परिवहन सुविधा और श्रम संसाधन MSME विकास को प्रभावित करते हैं।

विकसित भारत में लघु उद्योगों की भूमिका एवं चुनौतियाँ :

लघु उद्योग भारत में बड़े पैमाने पर रोजगार प्रदान करते हैं। ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में इनकी भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। भारत सरकार ने वर्ष 2047 तक देश को एक विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसे विकसित भारत @2047 की संकल्पना के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए औद्योगिक विकास, रोजगार सृजन और आर्थिक आत्मनिर्भरता अत्यंत आवश्यक हैं। इन सभी क्षेत्रों में लघु उद्योगों की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। लघु उद्योग न केवल आर्थिक विकास को गति देते हैं, बल्कि सामाजिक और क्षेत्रीय संतुलन स्थापित करने में भी सहायक होते हैं।

लघु उद्योग वे उद्योग होते हैं जिनमें पूंजी निवेश अपेक्षाकृत कम होता है और जिनका संचालन छोटे स्तर पर किया जाता है। भारत में इन उद्योगों का संचालन मुख्य रूप से Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises (MSME) के अंतर्गत किया जाता है। खादी उद्योग, हस्तशिल्प, हथकरघा उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग तथा छोटे विनिर्माण उद्योग इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

विकसित भारत के निर्माण में लघु उद्योगों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका **रोजगार सृजन** के क्षेत्र में है। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में बेरोजगारी एक बड़ी चुनौती है। लघु उद्योग कम पूंजी में अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं। विशेष रूप से ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में ये उद्योग स्थानीय लोगों को रोजगार उपलब्ध कराकर आर्थिक स्थिरता प्रदान करते हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन भी कम होता है। लघु उद्योग **ग्रामीण विकास** को भी बढ़ावा देते हैं। भारत की बड़ी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और वहाँ कृषि के अलावा आय के सीमित स्रोत होते हैं। लघु उद्योगों की स्थापना से ग्रामीण क्षेत्रों में नए आर्थिक अवसर उत्पन्न होते हैं। इससे ग्रामीण लोगों की आय बढ़ती है और जीवन स्तर में सुधार होता है। इस प्रकार लघु उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इसके अतिरिक्त लघु उद्योग **क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने** में भी सहायक होते हैं। बड़े उद्योग सामान्यतः महानगरों और विकसित क्षेत्रों में स्थापित होते हैं, जबकि लघु उद्योग अपेक्षाकृत पिछड़े और ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्थापित किए जा सकते हैं। इससे विभिन्न क्षेत्रों में औद्योगिक विकास का संतुलन बना रहता है और देश के समग्र विकास को बढ़ावा मिलता है। लघु उद्योग भारत के **निर्यात** में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। हस्तशिल्प, कालीन, वस्त्र और चमड़ा उद्योग जैसे अनेक लघु उद्योग उत्पाद अंतरराष्ट्रीय बाजार में लोकप्रिय हैं। इन उत्पादों के निर्यात से विदेशी मुद्रा अर्जित होती है और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है। साथ ही ये उद्योग स्थानीय संसाधनों का प्रभावी उपयोग करते हैं, जिससे उत्पादन लागत कम होती है और पर्यावरणीय संतुलन भी बना रहता है। हालाँकि लघु उद्योगों के सामने वित्तीय संसाधनों की कमी, आधुनिक तकनीक का अभाव और विपणन समस्याएँ जैसी चुनौतियाँ भी हैं। यदि सरकार द्वारा उचित नीतियाँ, तकनीकी सहायता और वित्तीय समर्थन प्रदान किया जाए तो यह क्षेत्र और अधिक सशक्त हो सकता है।

लघु उद्योगों के सामने सबसे बड़ी चुनौती **वित्तीय संसाधनों की कमी** है। अधिकांश छोटे उद्यमियों के पास पर्याप्त पूंजी नहीं होती, जिसके कारण वे अपने उद्योग का विस्तार या आधुनिकीकरण नहीं कर पाते। बैंक और वित्तीय संस्थानों से ऋण प्राप्त करने की प्रक्रिया भी कई बार जटिल और समय-साध्य होती है। इसके कारण कई संभावित उद्यमी उद्योग स्थापित करने से हिचकते हैं। दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती **आधुनिक तकनीक का अभाव** है। बड़े उद्योगों की तुलना में लघु उद्योगों के पास नवीनतम मशीनों और तकनीकों को अपनाने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं होते। परिणामस्वरूप उनकी उत्पादकता और गुणवत्ता प्रभावित होती है, जिससे वे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा करने में कठिनाई महसूस करते हैं। लघु उद्योगों के सामने **विपणन (मार्केटिंग) की समस्या** भी एक बड़ी चुनौती है। छोटे उद्योगों के पास बड़े उद्योगों की तरह मजबूत विपणन नेटवर्क या विज्ञापन के साधन नहीं होते। इसके कारण उनके उत्पादों को व्यापक बाजार नहीं मिल पाता। कई बार अच्छे उत्पाद होने के बावजूद बाजार तक पहुँच की कमी के कारण उनका उत्पादन सीमित रह जाता है। इसके अतिरिक्त **बड़े उद्योगों से प्रतिस्पर्धा** भी लघु उद्योगों के लिए चुनौतीपूर्ण होती है। बड़े उद्योगों के पास अधिक पूंजी, उन्नत तकनीक और व्यापक विपणन नेटवर्क होता है, जिससे वे कम लागत में अधिक उत्पादन कर पाते हैं। इससे लघु उद्योगों के लिए बाजार में टिके रहना कठिन हो जाता है। **बुनियादी ढाँचे की कमी** भी लघु उद्योगों के विकास में बाधा बनती है। विशेष रूप से ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में बिजली, परिवहन, संचार और भंडारण जैसी सुविधाएँ पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं होतीं। इससे उत्पादन और वितरण दोनों प्रभावित होते हैं। इसके साथ-साथ **कुशल श्रम शक्ति की कमी**

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

भी एक समस्या है। कई बार छोटे उद्योगों में प्रशिक्षित और कुशल श्रमिकों की उपलब्धता सीमित होती है, जिससे उत्पादन की गुणवत्ता और दक्षता प्रभावित होती है। कौशल विकास कार्यक्रमों की कमी के कारण यह समस्या और अधिक बढ़ जाती है।

हालाँकि सरकार द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान और मेक इन इंडिया जैसी योजनाओं के माध्यम से लघु उद्योगों को प्रोत्साहित करने के प्रयास किए जा रहे हैं, फिर भी इन चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है। अंततः कहा जा सकता है कि विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने में लघु उद्योगों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये उद्योग रोजगार सृजन, ग्रामीण विकास, क्षेत्रीय संतुलन और निर्यात वृद्धि के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाते हैं। इसलिए लघु उद्योगों को प्रोत्साहन देना विकसित भारत के निर्माण की दिशा में एक आवश्यक कदम है।

सुझाव :

लघु उद्योगों के विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपाय **वित्तीय सहायता को सुलभ बनाना** है। कई छोटे उद्यमी पूंजी की कमी के कारण उद्योग स्थापित करने या उसका विस्तार करने में असमर्थ होते हैं। इसलिए सरकार और वित्तीय संस्थानों को चाहिए कि वे लघु उद्योगों को कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराएँ और ऋण प्रक्रिया को सरल बनाएँ। इससे नए उद्यमियों को उद्योग स्थापित करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा और उद्योगों का विस्तार भी संभव होगा। लघु उद्योगों के विकास के लिए **आधुनिक तकनीक का उपयोग** भी अत्यंत आवश्यक है। वर्तमान समय में प्रतिस्पर्धा बहुत अधिक बढ़ गई है और बाजार में टिके रहने के लिए उत्पादन की गुणवत्ता और दक्षता को बढ़ाना आवश्यक है। इसके लिए लघु उद्योगों को नई तकनीकों और आधुनिक मशीनों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। सरकार को तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रमों और तकनीकी सहायता केंद्रों की स्थापना करनी चाहिए ताकि छोटे उद्यमी आधुनिक तकनीक का उपयोग कर सकें। **कौशल विकास (Skill Development)** भी लघु उद्योगों के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण उपाय है। कई बार उद्योगों में कुशल श्रमिकों की कमी के कारण उत्पादन प्रभावित होता है। इसलिए श्रमिकों को प्रशिक्षण प्रदान करना आवश्यक है। सरकार द्वारा विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को उद्योगों के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है। इससे रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे और उद्योगों की उत्पादकता में भी सुधार होगा। लघु उद्योगों के लिए **विपणन सुविधाओं का विकास** भी अत्यंत आवश्यक है। छोटे उद्योगों के पास बड़े उद्योगों की तरह मजबूत विपणन नेटवर्क नहीं होता, जिसके कारण उनके उत्पाद बाजार तक आसानी से नहीं पहुँच पाते। इसलिए सरकार को लघु उद्योगों के उत्पादों के लिए विशेष बाजार, प्रदर्शनी और व्यापार मेलों का आयोजन करना चाहिए। इसके साथ ही ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के माध्यम से भी इन उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुँचाया जा सकता है। लघु उद्योगों के विकास के लिए **औद्योगिक क्लस्टर (Industrial Cluster) का विकास** भी एक प्रभावी उपाय है। क्लस्टर का अर्थ है कि एक ही प्रकार के उद्योगों को एक स्थान पर स्थापित किया जाए ताकि वे आपसी सहयोग से कार्य कर सकें। इससे उत्पादन लागत कम होती है और संसाधनों का बेहतर उपयोग संभव होता है। भारत के कई क्षेत्रों में वस्त्र, हस्तशिल्प और चमड़ा उद्योग के क्लस्टर विकसित किए गए हैं, जो उद्योगों के विकास में सहायक सिद्ध हुए हैं। इसके अलावा **बुनियादी ढाँचे का विकास** भी लघु उद्योगों के लिए आवश्यक है। उद्योगों के सफल संचालन के लिए बिजली, सड़क, परिवहन और संचार जैसी सुविधाएँ अनिवार्य होती हैं। विशेष रूप से ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में इन सुविधाओं का विकास किया जाना चाहिए ताकि लघु उद्योगों को सुचारु रूप से संचालित किया जा सके।

सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से भी लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। जैसे मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और आत्मनिर्भर भारत अभियान जैसी पहलें उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इन योजनाओं के माध्यम से उद्यमियों को वित्तीय सहायता, तकनीकी मार्गदर्शन और बाजार सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं।

निष्कर्ष :

विकसित भारत @2047 की संकल्पना को प्राप्त करने के लिए आर्थिक विकास, औद्योगिक विस्तार, रोजगार सृजन तथा क्षेत्रीय संतुलन अत्यंत आवश्यक हैं। इस संदर्भ में लघु उद्योगों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि लघु उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार हैं। ये उद्योग कम पूंजी निवेश में अधिक रोजगार उपलब्ध कराते हैं तथा ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं। भौगोलिक दृष्टि से लघु उद्योग स्थानीय संसाधनों का प्रभावी उपयोग करते हुए विभिन्न क्षेत्रों

में औद्योगिक विकास को संभव बनाते हैं। इससे न केवल आर्थिक प्रगति होती है बल्कि क्षेत्रीय असमानताओं को भी कम करने में सहायता मिलती है।

अंततः कहा जा सकता है कि लघु उद्योग विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। रोजगार सृजन, ग्रामीण विकास, निर्यात वृद्धि और क्षेत्रीय संतुलन के माध्यम से यह क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में सहायक सिद्ध होगा। यदि सरकार द्वारा उचित नीतियाँ, वित्तीय सहायता और तकनीकी समर्थन प्रदान किया जाए तो लघु उद्योग विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इसलिए लघु उद्योगों का समुचित विकास विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1.Husain, M. (2017). Economic Geography. McGraw Hill Education.

2. Puri, V. K., & Misra, S. K. (2018). Indian economy (33rd ed.). Mumbai: Himalaya Publishing House.

3. Dewett, K. K., Varma, J. D., & Sharma, M. L. (2017). Modern economic theory. New Delhi: S. Chand Publishing.

4.NITI Aayog. (2023). Vision for Developed India 2047. Government of India.

5.Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises. (2023). MSME Annual Report 2022-23. Government of India.

6. https://udyamregistration.gov.in. Total MSME Registered Enterprises under UDYAM Registration, Published On: 01/11/2021.

7.सिंह, आर. एल. (2015). आर्थिक भूगोल. नई दिल्ली: आत्माराम एंड संस।

8.शर्मा, एच. एस. (2016). भारत का आर्थिक भूगोल. जयपुर: रावत पब्लिकेशन।

Cite this Article:

डॉ.रमन प्रकाश, "विकसित भारत की संकल्पना और लघु उद्योगों की भूमिका: एक भौगोलिक अध्ययन" *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, pp.22-28, March-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ.रमन प्रकाश

For publication of research paper title

विकसित भारत की संकल्पना और लघु उद्योगों की भूमिका: एक भौगोलिक अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.03